www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

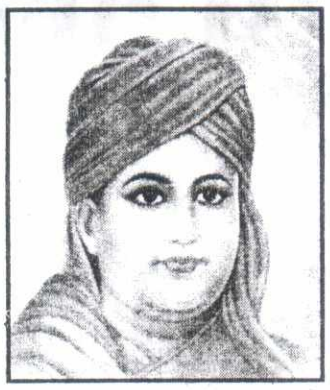

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य
वर्ष : 13 अंक : 23 रोहतक, 14 नवम्बर, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

सृष्टि की उत्पत्ति किससे, कब व क्यों?

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हम जिस संसार में रहते हैं वह हमें बना बनाया मिला है। हमारे जन्म से पूर्व इस संसार में हमारे माता-पिता व पूर्वज रहते आये हैं। न तो हमें हमारे माता-पिता से और न हमें अपने अध्यापकों व विद्यालीय पुस्तकों में इस बात का सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ कि यह संसार कब, किसने व क्यों बनाया है। क्या यह प्रश्न महत्वहीन है, या फिर इसका ज्ञान संसार में किसी को है ही नहीं? हमें दूसरा प्रश्न ही कुछ सीमा तक उचित प्रतीत होता है। यदि इन प्रश्नों के उत्तर हमारे वैज्ञानिकों, विद्वानों वा अध्यापकों आदि के पास होते तो वह निश्चय ही इसका प्रचार करते। अध्ययन करने पर इसका मुख्य कारण ज्ञात होता है कि विगत 5 हजार वर्षों में हमारे देश के लोगों ने वेद और वैदिक साहित्य का सत्य वेदार्थ पद्धति से अध्ययन करना छोड़ दिया जिस कारण मनुष्य न केवल इन प्रश्नों के उत्तर से ही वंचित व अनभिज्ञ हो गया अपितु ईश्वर व जीवात्मा आदि के सच्चे ज्ञान से भी दूर होकर अज्ञान, अन्धविश्वासों और कुरीतियों से ग्रसित हो गया। यही स्थिति महर्षि दयानन्द के 12 फरवरी, 1825 को गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर जन्म के समय भी थी परन्तु उनमें इन प्रश्नों को जानने की जिज्ञासा थी और इसके लिए अपना जीवन लगाने का जज्बा भी उनमें था। उन्होंने घर के सभी सुखों का त्याग कर इस संसार के सत्य रहस्यों को जानने का निश्चय किया और विद्वानों की संगति व सेवा में जाकर जिससे जितना व जो भी ज्ञान प्राप्त हो सकता था, उसे प्राप्त किया। स्वामी दयानन्द ने किसी एक ही व्यक्ति को अपना गुरु बनाकर सन्तोष नहीं किया अपितु देश में सर्वत्र घूमकर जिससे जहां जो भी ज्ञान मिला उसे अपनी बुद्धि व स्मृति में स्थान दिया जिसका परिणाम हुआ कि अनेक विद्वानों के सम्पर्क में आकर वह शून्य से आरम्भ होकर अनन्त ज्ञान वेद व ईश्वर तक पहुंचे और सभी जिज्ञासाओं, प्रश्नों, शंकाओं व भ्रान्तियों के उत्तर प्राप्त किये और उससे सारे संसार को भी आलोकित व लाभान्वित किया। मथुरा के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द का तीन वर्ष शिष्यत्व प्राप्त कर उनसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर वह सन्तुष्ट हुए थे। सृष्टि की रचना व उत्पत्ति के प्रसंग में यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि संसार में कोई भी रचना व उत्पत्ति बिना कर्त्ता के नहीं होती। इसके साथ यह भी महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि कर्ता को अपने कार्य का पूर्ण ज्ञान होने के साथ उसको सम्पादित करने के लिए पर्याप्त शक्ति वा बल भी होना चाहिये। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सृष्टि एक कर्ता जो ज्ञान व बल से युक्त है, उसी से बनी है। वह स्रष्टा कौन है? संसार में ऐसी कोई सत्ता दृष्टिगोचर नहीं होती जिसे इस सृष्टि की रचना का अधिष्ठाता, रचयिता व उत्पत्तिकर्ता कहा व माना जा सके। अत: यह सुनिश्चित होता है कि वह सत्ता है तो अवश्य परन्तु वह अदृश्य सत्ता है। क्या संसार में कोई अदृश्य सत्ता ऐसी हो सकती है जिससे यह सृष्टि बनी है? इस पर विचार करने पर हमारा ध्यान स्वयं अपनी आत्मा की ओर जाता है। हम एक ज्ञानवान चेतन तत्व वा पदार्थ है जो शक्ति वा बल से युक्त हैं। हमने स्वयं को आज तक नहीं देखा। हम जो, इस शरीर में रहते हैं व इस शरीर के द्वारा अनेक कार्यों को सम्पादित करते हैं, वह आकार, रंग व रूप में कैसा है? हम अपने को ही क्यों ले, हम अन्य असंख्य प्राणियों को भी देखते हैं परन्तु उनके शरीर से ही अनुमान करते हैं कि इनके शरीरों में एक जीवात्मा है जिसके कारण इनका शरीर कार्य कर रहा है। इस जीवात्मा के माता के गर्भ में शरीर से संयुक्त होने और संसार में आने पर जन्म होता है और जिस चेतन जीवात्मा के निकल जाने पर ही यह शरीर मृतक का शव कहलाता है। हम यह भी जानते हैं कि सभी प्राणियों के शरीरों में रहने वाला जीवात्मा आकार में अत्यन्त अल्प परिणाम वाला है। अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण इसका अस्तित्व होकर भी यह दिखाई नहीं देता है। अत: संसार में हमारी इस आत्मा की ही भांति जीवात्मा से सर्वथा भिन्न एक अन्य शक्ति, निराकार स्वरूप और सर्वव्यापक, चेतन पदार्थ, आनन्द व सुखों से युक्त, ज्ञान-बल- शक्ति की पराकाष्ठा से परिपूर्ण, सूक्ष्म जड़ प्रकृति की नियंत्रक सत्ता ईश्वर वा परमात्मा हो सकती है। ऐसी ईश्वर नामी सत्ता से ही सूर्य, चन्द्र, ग्रह-उपग्रह, नक्षत्र, असंख्य सौर मण्डलों से युक्त यह संसार, सृष्टि, ब्रह्माण्ड व जगत अस्तित्व में आ सकता है, इसमें सन्देह का कोई कारण नहीं। यही एक मात्र विकल्प हमारे सामने हैं। अन्य कोई दूसरा विकल्प है ही नहीं। अब इस अनुमान का प्रमाण प्राप्त करना है जोकि वेद व वैदिक साहित्य के गहन व गम्भीर अध्ययन तथा ईश्वरोपासना, विचार, चिन्तन, मनन, ध्यान व समाधि के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अब हमें यह भी विचार करना है कि वस्तुत: वेद और वैदिक साहित्य है क्या? इसको जानने के लिए हमें इस सृष्टि के आरम्भ में जाना होगा। जब सुदूर अतीत में यह सृष्टि उत्पन्न हुई तो अन्य प्राणियों को उत्पन्न करने के बाद मनुष्यों को भी उत्पन्न किया गया होगा। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों की उत्पत्ति माता-पिता से न होकर अमैथुनी विधि से परमात्मा व सृष्टिकर्ता करता है। इसका भी अन्य कोई विकल्प नहीं है, अत: ईश्वर द्वारा अमैथुनी सृष्टि को ही मानना हमारे लिए अनिवार्य व अपरिहार्य है। सृष्टि, सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि तथा पृथिवी पर अग्नि, वायु, जल व प्राणी जगत् सहित मनुष्य भी उत्पन्न हो जाने पर मनुष्यों को ज्ञान की आवश्यकता होती है जिससे वह अपने दैनन्दिन कार्यों का सुगमतापूर्वक निर्वाह कर सके। यह ज्ञान भी उसे यदि मिल सकता है वा मिला है तो वह सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी ईश्वर से ही मिला है। इसके अनेक प्रमाण हमारे पास हैं। पहला प्रमाण तो परम्परा का है। भारत में विपुल वैदिक साहित्य है जिसमें सर्वत्र वेदों को ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् ईश्वर से प्रदत्त ज्ञान बताया गया है। वेद संसार में सबसे प्राचीनतम होने के कारण भी ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होता

क्रमश: पृष्ठ 7 पर.....

www.thearyasamaj.org

वेदों में कोई लौकिक इतिहास नहीं

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

वेदों के अनेक पदों से यह भ्रम होता है कि उनमें ऐतिहासिक स्त्री-पुरुषों, ऋषि-मुनियों, नगरों, नदियों, पर्वतों के नाम हैं, जिन्हें देखकर प्राय: विद्वान् कह देते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास है। पाश्चात्य संस्कृतज्ञ ही नहीं वेदों को स्वत: प्रमाण मानने वाले भारतीय वेदभाष्यकार सायणाचार्य आदि भी वेदों में लौकिक इतिहास को स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा वेद के शब्दों को रूढ़ि मान बैठने से होता है। जबकि वास्तव में वे सभी आचार्यों के मत में यौगिक हैं। कालान्तर में उनके अर्थ विशेष में सीमित हो जाने पर वे रूढ़ होने लगे। वेदों में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। ईश्वरीय ज्ञान का प्रादुर्भाव मानव उत्पत्ति के साथ ही होता है। अत: उसमें मानव इतिहास नहीं हो सकता है, क्योंकि इसके पूर्व मानव उत्पत्ति नहीं होने से इतिहास सृजित ही नहीं हुआ था। सृष्टि के आदि में जब ज्ञान का एकमात्र आधार वेद ही था और मनुष्यों के व्यवहार की एकमात्र भाषा वैदिक भाषा थी, तब मनुष्यों द्वारा रक्खे गये पदार्थों के नाम वैदिक नामों से भिन्न कैसे हो सकते थे।

इस विषय में मनु महाराज लिखते हैं कि—

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्। वेद शब्देभ्य एवादो पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

(मनु० 1/21)

सृष्टि के आदि में ज्ञान देते समय परमेश्वर ने सब पदार्थों के नाम, कर्म आदि बता दिये। उन्हीं नामों का लोग प्रयोग करने लगे। यौगिक प्रक्रियानुसार वैदिक शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार के लोक में नाम आये, लोक से वेद में नहीं गये। वेद का इन ऐतिहासिक व्यक्तियों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

वेद में लौकिक इतिहास मानने पर वेद को अनित्य मानना पड़ेगा, इससे ईश्वर में भी पक्षपात की सिद्धि होगी। यौगिक प्रक्रिया अनुसार अर्थ होने पर वेद का कोई भी शब्द व्यक्ति या स्थान विशेष का वाचक नहीं रहता। जहां ऐसा होता है, वस्तुत: वहां प्राकृतिक जगत् के कारण तथा कार्यरूप तत्त्वों का औपचारिक तथा आलंकारिक वर्णन होता है। इस विषय में मीमांसा भाष्यकार शबर स्वामी लिखते हैं—यह इतिहास जैसा प्रतीत होता है (वास्तव में है नहीं) यदि इतिहास माना जाये तो वेद को सादि अथवा अनित्य मानना पड़ेगा, परन्तु ऐसा नहीं है।

वेदों में लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं है—इस तथ्य को स्थापित करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को जाता है। वेद में अर्जुन, द्रौपदी, राम, कृष्ण, सीता आदि ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम, गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों के नाम, अयोध्या नगर आदि नाम अवश्य पाये जाते हैं, परन्तु वेद में इन लौकिक नामों से किंचित् मात्र भी सम्बन्ध नहीं है। वेद के सभी शब्द यौगिक हैं, आदिकाल में संस्कृत के समस्त नाम पद यौगिक अर्थात् धातुज माने जाते थे। धार्त्विक अर्थों के अनुसार प्रकरणानुसार इनका अर्थ भिन्न हो जाता है।

उदाहरणार्थ—'यो वायुना यजति गोमतीषु' (ऋग्वेद 4.21.4) अर्थात् जो वायु द्वारा गोमती में होम करता है। **'सरस्वती यां पितरो हवन्ते'** (ऋग्वेद 10.17.9) अर्थात् उस सरस्वती को जिसमें पितर हवन करते हैं।

उपर्युक्त ऋग्वेद के दोनों मन्त्रों में गोमती और सरस्वती नदियों के नाम नहीं है, अपितु यज्ञ और हवन से सम्बन्ध रखने वाले नाम हैं। इसलिए स्पष्ट ही वे किरण के बोधक हैं।

अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वक: सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

(यजु० 23.18)

इस मन्त्र में वर्णित अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका तीनों महाभारत के काशीराज की कन्याएं नहीं हैं, जिन्हें भीष्म उठा ले गये थे। अपितु यहां अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका माता, दादरी और परदादी के वाचक हैं।

वैदिक काल में महाराज मनु के वंशजों ने सरयू नदी के तट पर अयोध्या नगरी का निर्माण किया था, वेद के शब्द से ही उसका नाम रखा था—**अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।** (अथर्व० 10.2.31-32)

इस मन्त्र में शरीर को ही देवताओं की नगरी बताया गया है जिसमें आठ चक्र और नौ द्वार हैं।

नवद्वारे पुरे देही (गीता) अर्थात् जिसमें देही (आत्मा) निवास करता है। इससे ज्ञात होता है कि वेदादि शास्त्रों में शरीर रूपी नगरी का नाम अयोध्या है। **कृष्णाया: पुत्रोऽर्जुन:** (अथर्व० 13.3.26)

वेद के इस मन्त्र में अर्जुन को द्रौपदी (कृष्णा) का पुत्र बताया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार **'रात्रिर्वैकृष्णा, असावादित्यत्तस्या वत्सौऽर्जुन:'** यहां वेद और ब्राह्मणग्रन्थ दोनों में कृष्णा (द्रौपदी) नाम रात्रि का है और उससे उत्पन्न होने के कारण आदित्य अथवा दिन (अर्जुन) उसका पुत्र है। इस प्रकार यहां द्रौपदी (रात्रि) और अर्जुन (दिन) को महाभारत की द्रौपदी और अर्जुन का वाचक नहीं माना जा सकता।

उपुर्यक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि वेद में अनित्य इतिहास अर्थात् किसी व्यक्ति या जाति विशेष का उल्लेख नहीं है। जिस वेदार्थ से वेद में लौकिक इतिहास का संकेत मिलेगा वह वेद की भूल भावना का द्योतक होगा। वेद से भिन्न अन्य धार्मिक ग्रन्थों में लौकिक इतिहास, भूगोल पाया जाता है। इसलिए उन्हें ईश्वरीय रचना नहीं कहा जा सकता। **उदाहरणार्थ—**

बाइबल—बाबुल के राजा नबूदुख नजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसर अदान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था। यरूसलम में आया और हर एक बड़े घर को जला दिया। (तौ०रा०प० 25/आ० 8 10)।

कुरान—जब युसूफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे! मैंने एक स्वप्न देखा। (मं० 3/सि० 12/सू०12/आ० 4.59)

हमने इस कुरान को अरबी में नाजिल किया है ताकि तुम समझ सको। (मं० 3/सि० 13/सू०13/आ० 37,40) (सूरते युसूफ आ० 1)

दूसरी आयत से लगता है कि खुदा का कुरान उतारने का मुख्य उद्देश्य केवल अरब वासियों का सुधार करना था। अरबी भाषा निश्चित रूप से एक देश विशेष की भाषा है। देश-विदेश की भाषा में ईश्वरीय ज्ञान देने से ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लग सकता है। परन्तु न्यायकारी परमपिता परमेश्वर ने वेदरूपी ज्ञान संस्कृत भाषा में प्रदान किया जो मूलरूप से सबकी भाषा थी।

बाइबल और कुरान में लौकिक इतिहास के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जबकि हम कह सकते हैं कि वेदों में लौकिक इतिहास नहीं है।

यहां यह बात समझने की है कि इस लेख में रूढ़ और यौगिक शब्द कई बार आए हैं। इनके क्या अर्थ हैं, यह हमको जानना उचित है। रूढ या रूढि शब्द का अर्थ है, जैसा शब्द है उसका वैसा ही अर्थ लगा लेना और यौगिक शब्द का अर्थ होता है, उसके आगे-पीछे के प्रकरणानुसार अर्थ लगाना जिसके काफी अर्थ निकल सकते हैं। वेदों में अधिकतर यौगिक शब्दों का ही प्रयोग हुआ है। उनका भाष्यकारों ने रूढि अर्थ लगा लिया, इसी से अर्थ का अनर्थ हुआ है।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी ने कई महीनों से विद्यालय में शनिवार को भाषण प्रतियोगिता को चालू करा रखा है। ब्रह्मचारी बड़े उत्साह से अपने विचार रखते हैं। बच्चों को भाषण देने की कला सिखाई जाती है।

दिनांक 5.11.2016 को विद्यालय में महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही की अध्यक्षता में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्यवक्ता ब्र० सुधार आर्य व ब्र० विक्रमादित्य थे। उन्होंने वेदमंत्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा समाज सुधार के भजन रखे। कार्यक्रम में ब्र० जतन आर्य, ब्र० अजीत आर्य, ब्र० सचिन आर्य आदि ने कविता, दोहे, ईश्वरभक्ति के भजन रखे।

महात्मा अत्तरसिंह स्नेही ने सब ब्रह्मचारियों का आशीर्वाद व धन्यवाद किया। उन्होंने भाषण देने की कला तथा महापुरुषों की जीवनी पढ़ने, वेदमंत्र व समाज सुधार के बारे में निर्भय होकर विचार रखने चाहिएं।

—अमित शास्त्री, अध्यापक, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 625. मुक्ति और बन्ध किन-किन बातों से होता है?

उत्तर-परमेश्वर की आज्ञा पालने, अधर्म, अविद्या, कुसंग, कुसंस्कार, बुरे व्यसनों से अलग रहने और सत्य भाषण, परोपकार, विद्या, पक्षपात रहित, न्याय-धर्म की वृद्धि करने, पूर्वोक्त प्रकार से परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अर्थात् योगाभ्यास करने, विद्या पढ़ने-पढ़ाने और धर्म से पुरुषार्थ कर ज्ञान की उन्नति करने, सब उत्तम साधनों को करने और जो कुछ करे वह सब पक्षपातरहित न्यायधर्मानुसार ही करे, इत्यादि साधनों से मुक्ति और इसके विपरीत ईश्वराज्ञा भंग करने आदि काम से बन्ध होता है।

प्रश्न 626. मुक्ति में जीव का लय होता है या विद्यमान रहता है?

उत्तर-मुक्ति में जीव का लय नहीं होता। ब्रह्म में विद्यमान रहता है।

प्रश्न 627. ब्रह्म कहां है और वह मुक्त जीव एक ठिकाने रहता है वा स्वेच्छाचारी होकर सर्वत्र घूमता है?

उत्तर-जो ब्रह्म सर्वत्र पूर्ण है उसी में मुक्त जीव अव्याहतगति अर्थात् उसको कहीं रुकावट नहीं, विज्ञान, आनन्द पूर्वक स्वतन्त्र विचरता है।

प्रश्न 628. मुक्त जीव का स्थूल शरीर रहता है वा नहीं?

उत्तर-मुक्त जीव का स्थूल शरीर नहीं रहता।

प्रश्न 629. मुक्त जीव का जब स्थूल शरीर नहीं रहता तो फिर वह सुख और आनन्द भोग कैसे करता है?

उत्तर-मोक्ष में भौतिक शरीर या इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण रहते हैं। जब सुनना चाहता है तब श्रोत्र, स्पर्श करना चाहता है तब त्वचा, देखने के संकल्प के अर्थ चक्षु, स्वाद के अर्थ रसना, गन्ध के लिए घ्राण, संकल्प-विकल्प करते समय मन, निश्चय करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और अहंकार के अर्थ अहंकार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है और संकल्पमात्र शरीर होता है। जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है, वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है।

प्रश्न 630. मुक्त जीव की शक्ति कितने प्रकार की और कितनी है?

उत्तर-मुख्य एक प्रकार की शक्ति है, परन्तु बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भाषण, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्धग्रहण तथा ज्ञान इन 24 प्रकार के सामर्थ्य जीव हैं। इससे मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति भोग करता है।

प्रश्न 631. मुक्ति में जीव के लय होने में क्या हानि है?

उत्तर-जो मुक्ति में जीव का लय होता तो मुक्ति सुख कौन भोगता और जीव के नाश को ही मुक्ति समझते हैं, वे महामूर्ख हैं, क्योंकि मुक्ति जीव की यह है कि दु:खों से छूटकर आनन्द स्वरूप, सर्वव्यापक, अनन्त परमेश्वर में जीव का आनन्द रहना।

प्रश्न 632. 'कठोपनिषद्' के अनुसार मोक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर-जब शुद्ध मन युक्त पांच ज्ञानेन्द्रियां जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है। उसको परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। **प्रश्न 633.** मुक्त जीव स्थूल शरीर को छोड़कर कैसा शरीर प्राप्त करते हैं और कहां विचरते हैं?

उत्तर-मुक्त जीव स्थूल शरीर को छोड़कर संकल्पमय शरीर से आकाश में परमेश्वर में विचरते हैं, क्योंकि जो शरीर वाले होते हैं वे सांसारिक दु:खों से रहित नहीं हो सकते।

प्रश्न 634. जीव मुक्ति को पाकर पुन: जन्म-मरण रूप दु:ख रूप में कभी आते हैं वा नहीं?

उत्तर-ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में आता है 'हम इस प्रकाश स्वरूप, अनादि, सदामुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो इसको मुक्ति में आनन्द भुगाकर पृथ्वी में पुन: माता-पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है। अत्यन्त विच्छेद बन्ध-मुक्ति का कभी नहीं होता, किन्तु बन्ध और मुक्ति सदा नहीं रहती।'

क्रमश: अगले अंक में....

अजीब पहेली

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

यदि वैसी चीज पहले भी बरती होती है, तो चित्त उन यादों को याद करता है। यह मेरी है या किसी और की, इस सम्बन्ध का अनुभव अहंकार करता है। ये सारी इन्द्रियां अपना-अपना कार्य आत्मा की चेतना से करती हैं।

अत: जीवित अवस्था में हम जो व्यवहार करते हैं, उस स्थिति में हमारा रूप आत्मा, मन और इन्द्रियों के मेल के रूप में होता है और तभी हमारे दुनियावी व्यवहार होते हैं। मन, इन्द्रियों के बिना अकेला आत्मा जीवन का कोई भी व्यवहार नहीं कर सकता। इसीलिए कठ उपनिषद् के ऋषि ने समझाया है कि विचारशीलों का विचार है कि दुनिया की चीजों को अपने व्यवहार में वर्त कर सुख-दु:ख का अनुभव करने वाला=भोक्ता प्रत्येक भोग-आत्मा, मन और इन्द्रियों के मेल के कारण ही करने में समर्थ होता है—**आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहु-र्मनीषिण:।** (कठ० 3,4) इसी बात की पुष्टि चरक [सूत्र-42] और न्याय दर्शन के प्राचीन भाष्यकार वात्स्यायन मुनि ने 1,1,19 सूत्र के भाष्य में की है कि किसी के पैदा होने का अर्थ है, शरीर, इन्द्रियों और मन का आत्मा से मेल होना। अत: संसार की दूसरी बनने वाली चीजों की तरह किसी प्राणी के जन्म का अर्थ है-इन सबका मेल।

मरण का मर्म-आइए! अब जन्म के बाद मरण शब्द पर भी कुछ विचार करें। मरण शब्द जन्म शब्द से विपरीत अर्थ को रखता है। अत: इसका सीधा-सा भाव हुआ कि किसी बनावट, उत्पत्ति का आंखों से ओझल हो जाना। किसी का न रहना ही उसका मरण, उसकी मौत या मृत्यु कहलाती है। कुछ के मेल से बनी हुई चीज के जोड़ जब किसी के कारण से अलग-अलग हो जाते हैं, तब उसका यह बिखराव ही उसका मरण कहा जा सकता है। जैसे मकान बहुत सारी चीजों के मेल से बनता है। समय के साथ एक दिन उसका तालमेल ढीला पड़ जाता है। कई बार समय से पहले भी किसी प्रकार की टक्कर, भूचाल, आग या बनावट की गड़बड़ के कारण वह तालमेल बिखर जाता है। तब वह भवन सर्दी-गर्मी-वर्षा से बचाव और आवास का अपना कार्य नहीं करता, यही उसकी मौत है।

मशीनों के बारे में प्राय: ऐसा देखा जाता है कि वे पहले की तरह ही बनी रहती हैं, उसके हिस्से का तालमेल पहले की तरह ही दीखता है, पर वे अपना कार्य करना बिल्कुल बन्द कर देती हैं, बार-बार यत्न करने पर भी वे अपना कार्य नहीं करतीं। किसी विशेष कारण से या समय के साथ नकारा हो जाने से उनकी मशीनरी कार्य नहीं करती। कई बार टक्कर या आग से भी यन्त्र एवं यान नकारा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति के लिए यम शब्द अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यम (उपरमे) धातु से यम शब्द बनता है, जिसका भाव है कि अपने कार्य से उपराम होना, अलग हो जाना, नकारा हो जाना। इसीलिए मौत और मौत के नियामक के लिए यम शब्द आता है। अत: स्पष्ट रूप से बनी हुई जड़ चीजों की मौत के सम्बन्ध में हम प्राय: ऐसा ही देखते और अनुभव करते हैं। इसके आधार पर प्राणियों की मौत के विषय में सरलता से समझा जा सकता है। हां, इस बारे में अब विचार करते हैं।

मृत्यु का मर्म-जब कोई मर जाता है, तो उसकी मौत के लिए आम भाषा में कहा जाता है कि पंछी उड़ गया, प्राण पखेरू उड़ गए, प्राण निकल गए, खेल खतम हो गया, इसका शरीर ठण्डा पड़ गया है। ये शब्द मौत की क्रिया और उसकी परिणाम की ओर संकेत करते हैं। प्रारम्भिक तीन शब्दों से स्पष्ट होता है कि जब किसी देह से प्राण निकल जाते हैं, तो उसकी मौत कहते हैं। जैसे फुटबाल, वालीबाल या पहिए की ट्यूब से हवा जब निकल जाती है, तो वह पहले जैसा कार्य नहीं करती। ऐसे प्राण जीवन का एक मुख्य तत्त्व है और जीवन शब्द जीव (प्राण धारणे) से बनता है। अत: किसी कारण से प्राण के निकलने को मौत कहते हैं।

खेल खतम होने का भाव है कि जीवित स्थिति में जो विविध कार्य हो रहे थे, वे अब नहीं होते। जैसे कि खेल में जो खिलाड़ी जिस रूप में जहां खेल रहे थे, वे उस रूप में खेल खतम होने पर नहीं खेलते। जीवित शरीर में कुछ गर्मी होती है, इसलिए तापमान देखा जाता है। आत्मा के सम्पर्क से शरीर में जो चेतना, गर्मी होती है, देहान्त होने पर जब आपस का सम्पर्क छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह गर्मी शरीर से निकल जाती है।

क्रमश:

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा... सर्दियों में पेट की बीमारियों से बचाव

सर्दियों में पेट की सूजन, छाती की जलन, एसिडिटी तथा पेट गैस व अल्सर की परेशानियां बढ़ जाती हैं। क्योंकि लोग खाने-पीने की मात्रा में वृद्धि कर देते हैं। गरिष्ठ भोजन करने से भी परेशानियों में वृद्धि होती है, क्योंकि दिन छोटे होने के कारण लोगों की काम करने की शक्ति में कमी आ जाती है और वे सुस्ती भरा जीवन व्यतीत करते हैं। इससे कई प्रकार की पेट की बीमारियां भी उन्हें आ घेरती हैं।

पेट की सूजन-पेट की सूजन होने का मुख्य कारण कई तरह के छोटे-छोटे कीटाणु (बैक्टीरिया) और सूक्ष्म कण (वायरस) हैं, जो कि पेट के अलग-अलग हिस्सों में जाकर बस जाते हैं जिससे पेट का वजन और आकार बढ़ना शुरू हो जाता है। इससे तकलीफ शुरू हो जाती है। पेट की सूजन के कारण पेट बढ़ा-बढ़ा नजर आता है और दर्द महसूस होता है। इसके परिणाम स्वरूप मरीज को कम भूख लगती है। पेट भारी लगता है और हल्का दर्द महसूस होता है। जी मिचलाता है और उल्टी आने को करती हैं। कोई भी चीज खाने को दिल नहीं करता। हल्का-हल्का बुखार होने से कोई भी काम करने को दिल नहीं करता। शौच बार-बार आता है और कुछ भी खाने पर एकदम पेट भारी महसूस होने लगता है। जबान हर वक्त बेस्वाद रहती है और जीभ पर हर समय कुछ जमा रहता है।

छाती में जलन-सर्दियों में गरिष्ठ भोजन के कारण छाती की जलन में वृद्धि हो जाती है। यह परेशानी पेट गैस या अफारे से बिल्कुल अलग है। कई बार यह पेट गैस का भी परिणाम होती है। इस परेशानी में हमारे पेट में उदर और भोजन की नली (फूड पाइप) के नीचे वाली जगह जो कि स्टरनस नामक हड्डी के नीचे होती है। इसको छाती की जलन (हार्ट बर्न) कहा जाता है। कई बार जलन तेज होने के कारण पीछे गर्दन की तरफ जाती है और हार्ट अटैक जैसी लगती है पर इसको हार्ट अटैक न समझें। जब हम खाने में कोई 'मोटी' चीज खाते हैं या गर्म चाय पीते हैं या शराब पीते हैं तो छाती में जलन पैदा होती है और कई बार आंखों से पानी निकल आता है। खाया-पिया ऊपर आने लगता है। छाती भारी-भारी लगती है और मुंह में हर समय पानी भरा रहता है। यह तकलीफ गरिष्ठ भोजन करने के बाद एकदम लेटने से बढ़ती है।

अल्सर-यदि पेट गैस और छाती की जलन का समय पर इलाज न हो तो अल्सर भी हो सकता है। हमारे पेट की अंतड़ियों में कई प्रकार के तरल निकलते हैं जो हमारे भोजन को पचाने में मदद करते हैं। जब हम चिन्ताग्रस्त या मानसिक तनाव में होते हैं तो अम्लीय माद्दा ज्यादा बनता है, जो कि हमारे पेट और अंतड़ियों की अंदरूनी झिल्ली को जला देती है। यह झिल्ली बहुत नर्म होती है। धीरे-धीरे इस भीतरी झिल्ली में घाव हो जाते हैं। जब ये घव पेट में हो जायें तो इसे गैस्ट्रिक अल्सर कहा जाता है जो लोग किसी कारणवश खून की कमी (एनीमिया) का शिकार हो जाते हैं, उनमें अम्लीय मादा बढ़ जाता है और ये तत्त्व अल्सर पैदा करते हैं।

पेट गैस-यह रोग पेट में अधिक मात्रा में अम्लीय मादा बनने के कारण होता है तथा हमारे पेट में अंतड़ियों की भीतरी झिल्ली और पेट की सूजन का कारण बनता है। फिर धीरे-धीरे यह झिल्ली जल जाती है। पेट गैस का मुख्य कारण चिन्ता है। जब हम सोचते हैं तो हमारे पेट और अंतड़ियों से अम्लीय पदार्थ अधिक निकलता है जो गैस पैदा करता है। जब हम गैस से पीड़ित होते हैं तब कम अंतराल में भोजन करते हैं, परन्तु अधिकतर चबाकर नहीं खाते हैं। इसलिए यह बीमारी एसिडिटी से हाईपर एसिडिटी में बदल जाती है और पेट की सूजन का कारण बनती है।

—डॉ. जसवन्त सिंह

हरियाणा सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार **आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा** दयानन्दमठ रोहतक के **त्रिवार्षिक चुनाव** के लिए पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के चुनाव सम्बन्धी

निर्धारित समय-सारणी

क्र०	विषय	दिनांक	समय
1.	नामांकन पत्र भरना नामांकन फीस 1000/- रु० स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक	23.11.16	प्रातः 10 से 1 बजे तक
2.	नामांकन पत्रों की जांच	25.11.16	प्रातः 9 से 4 बजे तक
3.	चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची जारी करना	26.11.16	सायं 4 बजे तक
4.	नामांकन पत्र वापिसी	28.11.16	प्रातः 10 से 4 बजे तक
5.	चुनाव लड़ने वाले सदस्यों की अन्तिम सूची	29.11.16	सायं 4.30 बजे तक
6.	चुनाव-चिह्न आवंटित करना	30.11.16	प्रातः 9 से 3 बजे तक
7.	चुनाव-प्रचार समाप्त	09.12.16	सायं 4 बजे
8.	साधारण सभा बैठक	11.12.16	प्रातः 9 से 10.30 बजे तक
9.	पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक	11.12.16	प्रातः 11 से 4 बजे तक
10.	वोटों की गिनती तथा परिणाम की घोषणा	11.12.16	वोटिंग के तुरन्त बाद
11.	विजयी उम्मीदवारों की सूची	11.12.16	परिणाम के तत्पश्चात्
12.	विजयी उम्मीदवारों को प्रमाण-पत्र	11.12.16	उम्मीदवारों की सूची जारी करने के पश्चात्

नोट-1. नामांकन फार्म की जमा की गई राशि 1000/- रु० वापिस नहीं होगी।
2. चुनाव लड़ने वाले इच्छुक उम्मीदवारों को साधारण सभा के सदस्यों (प्रतिनिधियों) में से एक सदस्य द्वारा फार्म को सत्यापित करवाना आवश्यक होगा।
3. साधारण सभा की बैठक सभा कार्यालय परिसर दयानन्दमठ रोहतक में होगी।
4. चुनाव के लिए सभा द्वारा जारी किये गए पहचान-पत्र अवश्य साथ लायें। जो पहचान-पत्र लाएगा उसी का मतदान डलवाया जाएगा।
5. यदि किसी मतदाता को पहचान-पत्र नहीं मिला या गुम हो गया है उस सूरत में उसके पास मूलरूप में चुनाव आयुक्त (भारत) से जारी पहचान-पत्र, डाइविंग लाइसेंस या राशनकार्ड, इनमें से कोई एक साथ लायें।
6. प्रतिनिधियों की सूची (वोटर लिस्ट) सभा की वैबसाईट **www.apsharyana.org** पर देख सकते हैं।

Skumar

(डॉ० सुरेन्द्र कुमार)
चुनाव अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

बुखार चिकिनगुनिया, मलेरिया व डेंगू का योग से करें उपचार

आइये जानते हैं कि योग व यज्ञ से हम कैसे जानलेवा बुखार चिकिनगुनिया, मलेरिया व डेंगू को दूर भगा सकते हैं, साथ ही हमारा समाज कैसे स्वस्थ व सुंदर बनता है।

योग सर्व रोगनाशक है, अब तक ये सुनते आ रहे थे, अब यह पूरी तरह प्रमाणित भी हो चुका है कि साध्य-असाध्य रोगों के समूल नाश के साथ ही अनुवांशिक रोगों को भी योग से मिटाया जा सकता है। कुछ प्राणायाम व आसनों के माध्यम से बुखार नाशक उपाय—

भस्त्रिका प्राणायाम-इस प्राणायाम से हमारे शरीर का तापमान सामान्य रहता है, बुखार से होने वाले सरदर्द व जोड़ों के दर्द व कफ रोगों को दूर करता है।

कपालभाति प्राणायाम-इसके द्वारा हम बुखार के रोगी का पेट खराब होने से बचा सकते हैं, पाचन क्रिया एकदम दुरुस्त रखता है ये। जब पेट सही होता है तो रस व रक्त के निर्माण की प्रक्रिया सही रहती है, रक्त कण (प्लेटलेस) का अभाव नहीं हो पाता, शौच भी खुलकर आता है।

अनुलोम-विलोम प्राणायाम-ये हमारे रक्त को शुद्ध करने व सम्पूर्ण देह में शुद्ध प्राणवायु का संचार करता है, शरीर की अशुद्धियों को भी बेहतर तरीके से दूर करता है, साथ ही हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है।

चन्द्रभेदी प्राणायाम-ये तीव्र बुखार में शरीर के तापमान को नियन्त्रित कर बुखार को सामान्य करता है। -पंकज आर्य

www.thearyasamaj.org

आदर्श पुरुष

❑ महात्मा चैतन्यमुनि

वेदों में मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए अनेकश: ऐसे स्वर्णिम सूत्र दिए गए हैं जिनका अनुकरण करने से व्यक्ति अपने जीवन को महान् से सुमहान् बना सकता है। ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के सैतालीसवें सूक्त में ऐसे बहुत से सूत्र दिए गए हैं जिनका अनुकरण करके व्यक्ति आर्य अर्थात् श्रेष्ठ एवं देव तथा आदर्श पुरुष बन सकता है। इस सूत्र के तीसरे मंत्र में कहा गया है—

उक्षा समुद्रो अरूष: सुपर्ण: पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश। मध्ये दिवो निहित: पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ (ऋ० 5.47.3)

हे मानव! यदि तू जीवन में देव अर्थात् एक आदर्श व्यक्ति बनना चाहता है तो तू (उक्षा) अर्थात् अपने शरीर में शक्ति संचय कर क्योंकि शरीर ही उन्नति का मूल कारण है। हमें अपने इस शरीर की कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि इसे निरन्तर परिपुष्ट बनाए रखना चाहिए क्योंकि वास्तव में हमारे सभी लौकिक तथा पारलौकिक क्रियाकलाप इस शरीर के बिना नहीं चल सकते हैं। जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है या इसे रोगी बनाता है वह परमात्मा की दृष्टि में भी अपराधी है क्योंकि उसने परमात्मा द्वारा प्रदत्त इस दुर्लभ शरीर की सुरक्षा नहीं की। हमारा खान-पान एवं आचार-व्यवहार ऐसा हो जिससे हमारा शरीर निरन्तर परिपुष्ट बना रहे। नियमित दिनचर्या के द्वारा हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। हमें इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि हमें क्या खाना चाहिए क्या नहीं खाना चाहिए। यदि हम अपने आहार एवं व्यवहार पर सूक्ष्मता से चिंतन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे तो निश्चित रूप से हम दीर्घायु को प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि केवल दीर्घायु ही प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है बल्कि दीर्घायु तक हम बोलते रहें, सुनते रहें, देखते रहें, अपने कार्य स्वयं करने की सामर्थ्य बनी रहे, यह भी आवश्यक है। निरन्तर प्राणायाम, व्यायाम तथा योगाभ्यास आदि द्वारा अपने शरीर को सदा स्वस्थ रखना चाहिए। मन्त्र में आगे कहा गया—(समुद्र:) जो अपने भीतर ज्ञान का समुद्र सृजित करता है वह देवता बन जाता है तथा उसका जीवन दूसरों के लिए भी अनुकरणीय बन जाता है। ज्ञान का अर्जन करने वाला व्यक्ति एक आदर्श व्यक्ति बन जाता है। वह स्वयं के भीतर ही आनन्दमयी वृत्ति का सृजन कर लेता है। व्यक्ति को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए। ज्ञान को बढ़ाना तो है ही मगर उस ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को बनाते भी चले जाना आवश्यक है अन्यथा वह ज्ञान भी अनावश्यक बोझ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। व्यक्ति को निरन्तर जीवन में स्वाध्यायशील बने रहना चाहिए अर्थात् निरन्तर आर्षग्रन्थों को पढ़ते रहना चाहिए और तदवत् अपना जीवन बनाते चले जाना चाहिए। इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व एक आदर्श व्यक्तित्व बन जाएगा।

आगे कहा गया है—(अरूष:) व्यक्ति को कभी क्रोधित नहीं होना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति को हम किसी प्रकार से भी आदर्श व्यक्ति नहीं कह सकते हैं। देव वह है, आदर्श पुरुष वह है जो कभी क्रोधित नहीं होता है। धर्म के दस लक्षणों में भी मनु महाराज ने एक लक्षण अक्रोध को रखा है। हमें भी आदर्श व्यक्ति बनने के लिए क्रोधरूपी चाण्डाल से सदा ही बचकर रहना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति दूसरों का तो विनाश करता ही है मगर उससे पूर्व वह अपना ही विनाश कर बैठता है। क्रोधी व्यक्ति अपने विवेक को खो देता है और जब व्यक्ति का विवेक ही समाप्त हो जाए तो वह क्या-क्या पापकर्म नहीं कर बैठेगा...।

आदर्श व्यक्ति वह है जो (सुपर्ण:) अर्थात् अपने जीवन को उत्तमता के साथ आगे ले जाता हुआ उसे पूर्णता प्रदान करता है। मानव जीवन का लक्ष्य है विवेकी होकर जीवन में लौकिक एवं पारलौकिक सम्पदाओं को प्राप्त करना। इसके लिए धर्म और सत्य के मार्ग पर चलते हुए उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए उसे सदा ही वेदमार्ग का अनुकरण करना चाहिए। वेद के सिद्धान्त की व्यक्ति की चतुर्दिक् उन्नति का आधार है। स्वयं को वेदज्ञान के अनुसार चलाकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करनी चाहिए। अपने आपको सद्गुणों से सजाते-संवारते रहना चाहिए। आगे कहा गया—(पूर्वस्य पितु: योनिं आविवेश) आदर्श व्यक्ति वह है जो परमपिता (सर्वमुख्य पिता) के गृह में प्रवेश करने वाला अर्थात् ब्रह्म में निवास करने वाला होता है। हमें प्रभु उपासना को प्रमुखता प्रदान करके अपने जीवन को साधनामय बनाना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है मगर ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थ में वे एक स्थान पर लिखते हैं कि वेद का मुख्य विषय ईश्वर अर्थात् ईश्वर प्राप्ति है। आदर्श व्यक्ति के जीवन का मुख्य लक्ष्य भी ईश्वर प्राप्ति ही होता है। वेद में आदर्श व्यक्ति का एक और गुण बताया गया है—(दिव: मध्ये निहित:) जो सदा ही ज्ञान के प्रकाश के मध्य रहता है अर्थात् प्रतिक्षण ज्ञान प्राप्ति में लगा रहता है.... ज्ञान ही व्यक्ति के उत्थान का आधार है इसलिए हमें वेदादि शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए और उस ज्ञान के अनुसार अपने जीवन को चलाना चाहिए। ज्ञान से ही व्यक्ति को विवेक प्राप्त होता है और विवेक होने पर ही उसे धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, विद्या-अविद्या आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

आदर्श व्यक्ति के लिए आगे कहा गया है कि (पृश्नि:) जहां वह ज्ञान-ज्योति से संतुष्ट रहता है वहीं पर (अश्मा) उसका शरीर पत्थर के समान दृढ़ होता है और (विक्रमे) आदर्श व्यक्ति विशिष्ट गति वाला होता है, विक्रम कार्यों को करने वाला होता है। आदर्श व्यक्ति जीवन में कठिन से कठिन कार्य को भी साहस और परिश्रम के साथ करने में सक्षम होता है। वह किसी भी विकट परिस्थिति में अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होता है। मन्त्र में एक और महत्त्वपूर्ण बात कही गई है कि आदर्श व्यक्ति (रजस: अन्तौ पाति) रजोगुण के सिरों को बचाता है अर्थात् वह न ही तामसिक होता है और न ही केवल सात्त्विक बल्कि वह नपी-तुली क्रियाएं करने वाला होता है। वहकिसी भी क्षेत्र में अतिवादी नहीं होता है बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदा ही एक सन्तुलन बनाए रखता है। वह प्रत्येक व्यक्ति या परिस्थिति के साथ सदा ही यथायोग्य व्यवहार करने वाला होकर अपनी प्रतिभा का परिचय देने वाला होता है।

महर्षि दयानन्द धाम, महादेव,
सुन्दरनगर-174401 (हि.प्र.)

चार मुक्तक

लापता हो गया कई दिनों से भगवान है यहाँ,
हर मोड़ पर बैठा हुआ अब शैतान है यहां।
सियासी सरहदों को ध्वस्त करना जरूरी है-
भाईचारे को रोके हुए यही चट्टान है यहां॥

सत्य की राह से हर रुकावट हटा देंगे,
मानव से मानव की दूरी निश्चित घटा देंगे।
आप एक बार पढ़कर जरा आवाज तो दो-
देश व धर्म पर हंस-हंसके शीश कटा देंगे॥

सुख की सेज़ नहीं तो फिर कांटों की ही ठौर सही,
करलो तुम भी मन की गमों का एक जख्म और सही।
जिन्दगी गुजार दी हमने खुदगर्जों की बस्ती में-
यही दौर यदि चलना है तो, फिर से यही दौर सही॥

पर पीड़ा से छलक उठे मन, यह छलकन ही गंगाजल है,
दु:ख हरने को पुलक उठे तन, यह पुलकन ही तुलसीदल है।
पर हित जीना, धर्म हित मरना, यही तो अमरता है-
तन-मन-धन हो जहाँ, समर्पित वही तो यज्ञस्थल है॥

—महात्मा चैतन्यमुनि

शोक-समाचार

सभा के पूर्व वेदप्रचाराधिष्ठाता बाबू रघुवीरसिंह बहु अकबरपुर वर्तमान निवास मॉडल टाउन रोहतक का दिनांक 7 नवम्बर 2016 को लगभग 95 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। वे आर्यसमाज के बहुत ही कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। वे सदैव आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया करते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं व्यथित परिवार को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

—सत्यवान आर्य, सहायक कार्यालयाधीक्षक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

www.thearyasamaj.org

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज नसोपुर (अलवर) राजस्थान का वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से दिनांक 14, 15 अक्तूबर, शुक्रवार-शनिवार को स्वामी सोमानन्द सरस्वती नसोपुर वैदिक आश्रम की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर दोनों दिन देवयज्ञ (हवन) किया गया जिसमें सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पाखण्ड-खण्डन, स्त्रीशिक्षा, युवक-निर्माण, गऊरक्षा, राष्ट्ररक्षा सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसे श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। इस सम्मेलन को आर्यजगत् के प्रख्यात कवि वैदिक विद्वान् पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्राम बहीन जिला पलवल (हरयाणा), श्री धर्मपाल आर्य भजनोपदेशक बैरावास (अलवर) श्री नन्दराम वैद्य (बहाला) अलवर तथा श्री संदीप आर्य मेरठ ने सम्बोधित किया। इस समारोह में युवक-युवतियों की उपस्थिति प्रशंसनीय थी।

—सत्यवीर आर्य, मंत्री आर्यसमाज नसोपुर जिला अलवर (राज०)

आर्य वीर दल मण्डल फरीदाबाद में वीर पर्व मनाया गया

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, मण्डल फरीदाबाद (हरयाणा) के तत्त्वावधान में विजयदशमी के दिन दिनांक 11 अक्तूबर 2016 को राजकीय माध्यमिक पाठशाला ग्राम सुनपेड़ (बल्लभगढ़) के प्रांगण में वीर पर्व, प्रातः 8.30 बजे से 10.30 बजे तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् श्री रामवीर प्रभाकर जी ने भजन प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् श्री बलबीर मलिक, संगठन मंत्री केन्द्रीय आर्य सभा फरीदाबाद, आचार्य ऋषिपाल जी अधिष्ठाता, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा डॉ० स्वामी वेदव्रत सरस्वती जी, प्रधान संचालक, आर्य वीर दल के प्रेरक व्याख्यान हुए। कार्यक्रम में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गांव सुनपेड़, डीग, मीसा, बहबलपुर, सोतई, सागरपुर, प्रहलादपुर, जवां, सागरपुर के 110 आर्य वीरों ने हिस्सा लिया।

आर्य वीर दल के अधिकारी श्री देशबन्धु आर्य, कुलभूषण आर्य, होतीलाल आर्य, महाशय हीरालाल जी आदि उपस्थित रहे। आर्यवीर सागर, सचिन, लोकेश, भूपेन्द्र, पवन, अजय, विष्णु, लोकेश, दीपक, सतीश आदि कने व्यवस्था संभाली।

—धर्मेन्द्र जिज्ञासु, मंत्री, आर्य वीर दल, फरीदाबाद (हरयाणा)

यज्ञो वै वसुः (यज्ञ बसाता है)

'यज्ञ करो, प्रदूषण मिटाओ' अभियान द्वारा
आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

प्रिय नागरिको !

'दीपावली' के बाद जो भयंकर प्रदूषण फैल गया है उसे दूर भगाने के लिए विद्यालय आप सबसे मंदिरों में, घरों में 'यज्ञ' करने की अपील करता है। इससे 'यज्ञ' परम्परा का विस्तार होगा व प्रदूषण दूर होकर बीमारियों से बचा जा सकेगा।

विधि :-

1) प्रत्येक घर में नित्यप्रति हवन करने के लिए इतने पुरोहितों की उपलब्धता सम्भव नहीं है। अतः स्वयं ही नित्य हवन करने के मंत्र सीखें। घर का एक सदस्य अवश्य यह सीखे।
2) मंत्र सीखने से पहल भी आज से ही सुबह शाम यज्ञ करें। समिधा (पीपल, गूलर, आम आदि की लकड़ियां) चयन करके अग्नि प्रज्जवलित करके उसमें घृत सामग्री की आहूतियां दें। अनेक आर्य विद्वानों की ऐसी मान्यता है।
3) कम से कम सोलह आहुतियां एक समय में देवें। प्रत्येक आहुति का प्रमाण कम से कम छः ग्राम होना चाहिए।

नोट :-'यज्ञ' अवश्य करें। अपने घरों व शहर का प्रदूषण दूर भगाएं। महर्षि दयानंद **'सत्यार्थ प्रकाश'** में स्पष्ट करते हैं कि अगरबत्ती, धूप आदि के धूएं में वह सामर्थ्य नहीं कि वह दूषित वायु को हल्का करके दूर हटा दें। यह सामर्थ्य केवल यज्ञ में है। **'मंदिरों'** के पुरोहितों से भी प्रार्थना करें कि इस अवसर पर बड़े-बड़े यज्ञ करें।

निवेदक : आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जीटी रोड, पानीपत।

देव दयानन्द बनो

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

जगद् गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
देशभक्त धर्मात्मा, थे वैदिक विद्वान्॥
थे वैदिक विद्वान्, तपस्वी थे ऋषि त्यागी।
मानवता के पुंज, निराले थे वैरागी॥
किया विश्व कल्याण, सन्त थे परोपकारी।
मान रही है देव, उन्हें अब दुनिया सारी॥

भूल गया है वेदपथ, फिर सारा संसार।
पाखण्डियों की हो गई, दुनिया में भरमार॥
दुनिया में भरमार, नित्य झगड़े होते हैं।
विधवा दीन अनाथ, रात-दिन अब रोते हैं॥
लाखों गऊएं सुनो! नित्य जाती हैं मारी।
मनमानी कर रहे, कुकर्मी, अत्याचारी॥

देती है दीपावली, हमें साफ सन्देश।
जागो प्यारे आर्यो! काटो कष्ट क्लेश॥
काटो कष्ट क्लेश, वेदप्रचार करो तुम।
वीर साहसी बनो, जगत् की पीर हरो तुम॥
करो धर्म के काम, उठो! कर्त्तव्य निभाओ।
ऋषिवर का है कर्ज, आर्यो! उसे चुकाओ॥

सुख पाओगे आर्यो! दूर भगाओ फूट।
जहाँ फूट हाती वहाँ, याद रखो तुम लूट॥
याद रखो तुम लूट, प्रेम रस धार बहाओ।
देव दयानन्द बनो, विश्व को आर्य बनाओ॥
मानवता लो धार, बड़ा आदर पाओगे।
'नन्दलाल' कह अमर, जगत् में हो जाओगे॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ शताब्दी समारोह

आप सभी को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ इस वर्ष अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर रहा है। अतः इस वर्ष गुरुकुल की शताब्दी समारोह बड़े ही उत्साह पूर्वक धूमधाम से दिनांक 19 व 20 नवम्बर 2016 को मनाने का विचार किया है। गुरुकुल के सभी स्नातकों से भी निवेदन है कि वे अपना परिचय, गुरुकुल के संस्मरण अपने फोटो सहित शीघ्र कार्यालय या ईमेल आई.डी. gurukulinderprasth@gmail.com पर डालने का कष्ट करें ताकि समारोह में उनसे सम्बन्धित कार्यक्रम को भी सम्मिलित किया जा सके। सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों व आर्यसमाजों से नम्र निवेदन है कि वे उपरोक्त तिथियों में अपना कार्यक्रम न रखें, सभी आर्य संगठन शक्ति का परिचय देते हुए इस कार्यक्रम में दल-बल सहित भाग लेने की कृपा करें। कार्यक्रम के लिए बड़े-बड़े त्यागी-तपस्वी, मनीषियों, वक्ताओं तथा राजनेताओं से सम्पर्क किया जा रहा है। सभी पत्रिकाओं के प्रकाशकों से भीनिवेदन है कि वे अपनी पत्रिका में इस सूचना को अवश्य प्रकाशित कर सहयोग देने की कृपा करें। सभी पत्रिकाओं के प्रकाशक अपने ग्राहकों की लिस्ट भी भेजने की कृपा करें ताकि व्यक्तिगत तौर पर शताब्दी के लिए पत्र भेजा जा सके।

पता—आचार्य ऋषिपाल, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्यनगर
सराय ख्वाजा, फरीदाबाद-121010 (हरयाणा)

सूचना

सभी प्रतिनिधियों को सूचित किया जाता है कि सभा के त्रिवार्षिक चुनाव दिनांक 11 दिसम्बर 2016 के लिए सभी प्रतिनिधियों (वोटरों) के पहचानपत्र बनकर तैयार हो गए हैं। अतः सभी प्रतिनिधियों (वोटरों) से निवेदन है कि वे अपना पहचान-पत्र सभा कार्यालय में किसीभी कार्यदिवस में 15 नवम्बर 2016 तक प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक प्राप्त कर लेवें।

—शेरसिंह, कार्यालयाधीक्षक

www.thearyasamaj.org

10 ग्राम व शहर में वेदप्रचार सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचार रथ से वेदप्रचार मण्डल पलवल के तत्त्वावधान में 27 सितम्बर से 5 अक्तूबर 2016 तक समाज में व्याप्त दहेजप्रथा, शराब, जातिवाद, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न, गोवध जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण अभियान चलाया गया। आज के इस भौतिकवाद के युग में सुख-शान्ति बनाये रखने हेतु तथा संस्कारित सन्तान, सदाचार, नैतिकता, भ्रातृभाव की भावना के प्रति जागृत किया।

वेदप्रचार रथ से किया गया वेदप्रचार का कार्यक्रम अति प्रभावशाली रहा। ग्रामों व नगरों में कार्यक्रमों से लोग प्रभावित हुए। गोमाता की दर्दनाक फिल्म देखने से गोभक्तों ने गोरक्षक (संरक्षक) दल में शामिल होने हेतु नाम दर्ज कराए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री तेजवीर आर्य, महाशय चतरसिंह, भजनलाल आर्य उपदेशक तथा क्षेत्र के पार्षद् भजनोपदेशक श्री नरदेव बेनिवाल ने ग्रामों व शहरों में वेदप्रचार किया। वेदप्रचार यात्रा के कार्यक्रम के अनुसार 27 सितम्बर को कृष्णा कालोनी पलवल, 28 सितम्बर को ग्रामी मीसा, 29 को ग्राम लुलवाड़ी 30 सितम्बर प्रात: व दोपहर बाद ग्राम अलावलपुर तथा रात्रि को आदर्श कालोनी पलवल, 1 अक्तूबर को प्रात: वन्देमातरम् स्कूल कैलाश नगर तथा रात्रि में कैलाश नगर पलवल, 2 अक्तूबर को ग्राम कौंडल स्वामी वेदानन्द जी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम, 3 अक्तूबर को ग्राम कुशक, 4 अक्तूबर को ग्राम किशोरपुर, 5 अक्तूबर को प्रात: पूर्व पार्षद सुनील सैनी पलवल के आवास पर वेदप्रचार हुआ। जिला वेदप्रचार मण्डल पलवल के प्रधान राधेलाल आर्य ने कार्यक्रम की समाप्ति पर धन्यवाद किया।

वेदप्रचार मण्डल के संयोजक श्री डालचन्द प्रभाकर, सहसंयोजक मा० हीरालाल आर्य ने कार्यक्रम को सफल बनाया। दौलतराम गुप्ता मंत्री वेदप्रचार मण्डल ने मंच का संचालन किया।

—दौलतराम गुप्ता मंत्री, वेदप्रचार मण्डल, पलवल

गुरुकुल होशंगाबाद का 105वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म०प्र०) का 105वां वार्षिकोत्सव दिनांक 9. 10. 11 दिसम्बर 2016 को आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे।

आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यक्रमकी शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

—योगेन्द्र याज्ञिक, सचिव, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म०प्र०)

शोक-समाचार

आर्यसमाज के बहुत बड़े कार्यकर्ता वैद्य दयाकिशन जी आर्य का देहांत दिनांक 26/10/2016 को हो गया वह 87 वर्ष के थे किंतु आज भी वह वेदप्रचार का कार्य निरंतर करते रहते थे वैद्य दयाकिशन जी का समाज के लिये बहुत बड़ा योगदान रहा अपने आयुर्वेदिक ज्ञान से उन्होंने अनेक रोगियों का सफल इलाज किया उन्होंने युवावस्था से ही आर्य समाज के कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेना शुरु कर दिया था 1957 के हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन में उनकी सक्रिय भूमिका थी जून 1957 से लेकर दिसंबर 1957 तक वैद्य जी हिंदी सत्याग्रही के रूप में फिरोजपुर जेल में रहे इस दौरान भी वह नियमित दैनिक यज्ञ करते रहे स्वामी रामेश्वरानंद जी के नेतृत्व में गोरक्षा आंदोलन में भी उन्होने सक्रिय भागीदारी निभाई जीवन के अंतिम पड़ाव में भी वैद्य जी आर्यसमाज जीन्द जंक्शन में पुरोहित के तौर पर आर्यों का मार्गदर्शन करते रहे उनके कार्यों को देखते हुए सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा ने वर्ष. 2012 के दिल्ली सम्मेलन में वैद्य दयाकिशन जी को सम्मानित भी किया था वेदप्रचारमण्डल जिला जीन्द उनकी मृत्यु पर शोक व्यक्त करता है।

—रमेश आर्य पूर्व मंत्री, वेदप्रचारमण्डल जिला जीन्द

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —संपादक

सृष्टि की उत्पत्ति किससे, कब..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

है। मनुष्य अपने सारे जीवन में ज्ञान की उत्पत्ति नहीं करता, वह तो ज्ञान की खोज करता है जो इस सृष्टि में पहले से ही सर्वत्र विद्यमान है। यह ज्ञान ईश्वर का स्वाभाविक गुण है और उसमें सदा सर्वदा व सनातन काल से है और शाश्वत व नित्य भी है। ईश्वर ने अध्ययन, ध्यान व चिन्तन आदि से ज्ञान को उत्पन्न नहीं किया अपितु यह उसमें स्वत: अनादि काल से चला आ रहा है।

परिमाण की दृष्टि से पूर्ण होने के कारण इसमें न्यूनाधिक नहीं होता और यह अनादि काल से ही एकरस व एक समान बना हुआ है और आगे भी इसी प्रकार का बना रहेगा। वेदों का अध्ययन कर भी वेद ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध होते हैं क्योंकि वेदों में ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति व संसार विषयक पूर्ण मौलिक ज्ञान बीज रूप में विद्यमान है जिसका समर्थन ज्ञान व विज्ञान से भी होता है। वेदों का ज्ञान पूर्णरूपेण सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से विज्ञान का पोषक है। वेदों की सभी मान्यतायें ज्ञान, बुद्धि, तर्क, ऊहा व वाद-विवाद कर सत्य सिद्ध होती हैं। सृष्टि के आदि से महर्षि दयानन्द पर्यन्त कोटिश: सभी ऋषियों ने वेदों का अध्ययन कर यही निष्कर्ष निकाला है। अत: वेद ज्ञान ईश्वर प्रदत्त आदि ज्ञान सिद्ध होता है जो सभी सत्य विद्याओं सहित सभी प्रकार के आधुनिक ज्ञान व विज्ञान का भी एकमात्र व प्रमुख आधार है। यदि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से मनुष्यों को ज्ञान न मिलता तो यह संसार आगे चल ही नहीं सकता था। वही वैदिक ज्ञान काल के प्रवाह व भौगोलिक कारणों से आज अनेक भाषाओं में न्यूनताओं को समेटे हुए हमें सर्वत्र प्राप्त होता है। सृष्टि के आरम्भ में वेदों की उत्पत्ति व ऋषियों को उसकी प्राप्ति के पश्चात समय-समय पर ऋषियों ने लोगों के हितार्थ विपुल वैदिक साहित्य की रचना की। संक्षेप में कहें तो वैदिक आर्ष व्याकरण, निरुक्त, वैदिक ज्योतिषीय ज्ञान, कल्प ग्रन्थ, 6 दर्शन, उपनिषद, प्रक्षेपों से रहित शुद्ध मनुस्मृति और वेदों की शाखायें हमारे ऋषियों ने अल्पबुद्धि वाले हम मनुष्यों के लिए बना दी जिससे मनुष्य जाति का उपकार व हित हो सके।

यह सिद्ध हो गया है कि सृष्टि उत्पत्ति विषयक सभी प्रश्नों का सत्य उत्तर हमें वेद और वैदिक साहित्य से ही प्राप्त होगा। सृष्टि की उत्पत्ति किससे हुई प्रश्न का उत्तर है कि यह सृष्टि ईश्वर कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षण युक्त है, उसी से ही यह सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। सृष्टि कब उत्पन्न हुई, का उत्तर है कि एक अरब छियानवें करोड़ आठ लाख त्रेपन हजार एक सौ पन्द्रह वर्ष पूर्व। यह काल गणना भी वैदिक परम्परा व ज्योतिष आदि शास्त्रों के आधार पर है। सृष्टि की रचना क्यों हुई का उत्तर है कि जीवात्माओं को उनके जन्म जन्मान्तरों के कर्मों के सुख व दु:ख रूपी फलों वा भोगों को प्रदान करने के लिए परम दयालु परमेश्वर ने की। सृष्टि रचना व संचालन का कारण जीवों के कर्म व उनके सुख-दु:ख रूपी फल प्रदान करना ही है। जीवात्मा को उसके लक्षणों से जाना जाता है। उसके शास्त्रीय लक्षण हैं, इच्छा, द्वेष, सुख, दु:ख, ज्ञान, कर्म, अल्पज्ञता व नित्यता आदि।

हमने अपने विगत 45 वर्षों में जो अध्ययन किया है उसके अनुसार हमें यह ज्ञान पूर्णतय: सत्य, बुद्धि संगत व विज्ञान की आवश्यकताओं के अनुरुप लगता है। हमारे वैज्ञानिक अनेक कारणों से ईश्वर व धर्म को नहीं मानते। आने वाले समय में उन्हें इस ओर कदम बढ़ाने ही होंगे अन्यथा उनकी सत्य की खोज अधूरी रहेगी। इन्हीं शब्दों के हम लेख को विराम देते हैं।

196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001
फोन-09412985121

सदस्यता शुल्क भेजें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको 'आर्य प्रतिनिधि' नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क सम्बन्धी जानकारी के लिए व्यवस्थापक श्री रघुवरदत्त से मोबाइल नं० 07206865945 फोन नं० 01262-216222 से सम्पर्क करें। -सम्पादक

www.thearyasamaj.org

पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक की 86वीं जयन्ती मनाई गई

अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती और मुख्य अतिथि डॉ० सत्यपाल सिंह ने किया प्रेरक आह्वान

जींद, शांतिधर्मी के संस्थापक व आद्य सम्पादक स्व० पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक की 86 वीं जयंती स्थानीय हिंदू कन्या महाविद्यालय के सभागार में आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानंद सरस्वती जी सांसद सीकर (राजस्थान) की अध्यक्षता में मनाई गई। मुख्य अतिथि मुंबई पुलिस के पूर्व कमिश्नर व बागपत के सांसद डॉ० सत्यपाल सिंह रहे। स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने आर्यसमाज के प्रचार के लिए स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के संघर्षों को याद करते हुए कहा कि-वे अन्तिम सांस तक आर्य समाज के माध्यम से राष्ट्र की सेवा करना चाहते थे। उन्होंने बताया कि पंडित जी का जीवन हजारों लोगों के लिए प्रेरणादायक था। पंडित जी जैसे समर्पित भजनोपदेशकों की वजह से ही आर्यसमाज की नींव आज गांव गांव तक फैल चुकी है। उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए हमें आज नई ऊर्जा के साथ वेद के प्रचार के लिये जुट जाना चाहिये। उन्होंने आर्यसमाज के पुराने उपदेशकों को याद करते हुए कहा कि पं० चन्द्रभानु के साहित्य पर शोध होना चाहिये जिससे नई पीढ़ियों को उनसे प्रेरणा मिले। हरियाणा में बढ़ रहे अंधविश्वास पर चिंता जताते हुए स्वामी जी ने कहा कि हमें पांच यज्ञ की संस्कृति को बढ़ाना चाहिए। हमें अपने घरों में इस प्रकार की व्यवस्था बनानी पड़ेगी कि भजन नहीं तो भोजन नहीं। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में परिवार की भूमिका को रेखांकित करते हुए बच्चों को नित्य प्रति संध्या सिखाने का संकल्प दिलवाया। उन्होंने बताया कि राष्ट्र की एकता के लिए कठोर अनुशासन जरूरी है। डॉ० सत्यपाल सिंह ने राष्ट्र सेवा के लिये आर्यसमाज की महती भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो स्वामी दयानंद राष्ट्र पितामह हैं। उन्होंने बताया कि करीब दो दशक बाद संसद में स्वामी दयानंद का संदेश गूंज रहा है। डॉ० सत्यपाल सिंह ने बताया कि महात्मा गांधी ने समाज सुधार की प्रेरणा स्वामी दयानंद से ही ली थी। कार्यक्रम में स्वामी सुमेधानंद सरस्वती व डॉ० सत्यपाल सिंह का पहली बार जीन्द शहर में आने पर पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक धर्मार्थ ट्रस्ट व विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा नागरिक अभिनंदन किया गया। समारोह में स्वामी रामवेश जी, डी ए वी संस्थाओं के निदेशक डॉ० धर्मदेव विद्यार्थी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष ब्र० दीक्षेन्द्र आर्य ने भी पण्डित जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के कार्यों में जी जान से जुट जाने का आह्वान किया। वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष मा० रायसिंह आर्य, आर्यसमाज से मा० राजवीर आर्य, बहन विनीता गुलाटी, मा० सतवीर जुलानी व महासिंह आर्य अशोक गुलाटी, मा० जगदीश सिन्धु, केवल जुलानी, जगफूल ढ़िल्लों ने अतिथियों का स्वागत किया। महाशय रामकुमार आर्य, पं० रामेश्वर दत्त, सुनील शास्त्री व गुरनाम आर्य ने भजन प्रस्तत किये। देवर्षि विद्यापीठ की बालिका मनीषा ने स्वामी दयानन्द से संबंधित मधुर गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। पंडित जी की पौत्रियों प्रतिभा, प्रतिष्ठा व आस्था ने मधुर आवाज में भजन गायन कर समा बांध दिया।

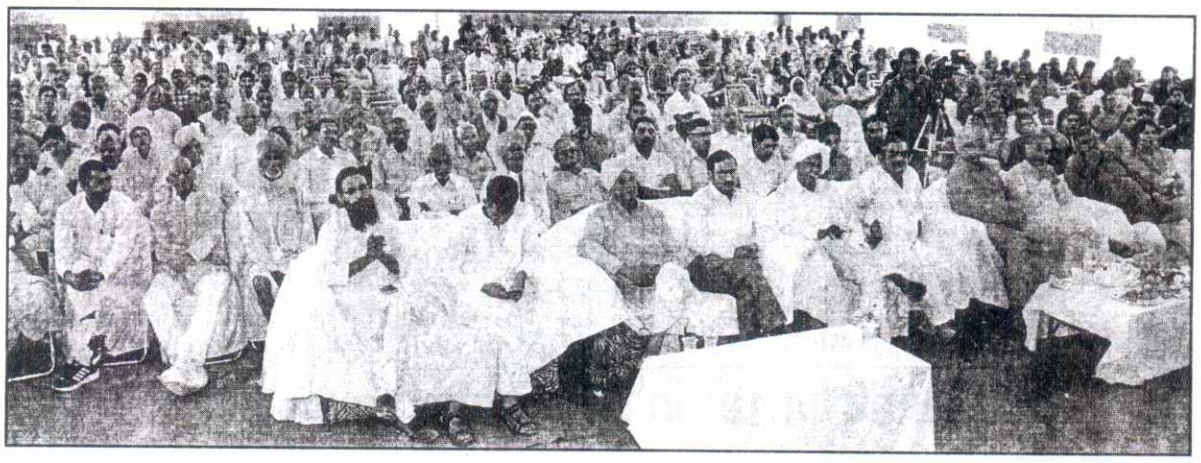

महाशय श्रीपाल आर्य का सम्मान

आर्यसमाज के महान प्रचारक, स्वामी भीष्म जी के शिष्य महाशय श्रीपाल आर्य बागपत को पंडित चंद्रभानु आर्य भजनोपदेशक सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें शाल, अभिनन्दन पत्र और स्वामी दयानंद का चित्र भेंट कर उनकी समाज सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया।

समारोह में स्व० पंडित जी के आत्मकथ्य, साहित्यिक विश्लेषण व सम्पर्क में आने वाले महानुभावों के संस्मरणों से युक्त ग्रंथ ' पं० चन्द्रभानु आर्योपदेशक : व्यक्तित्व व कृतित्व' का विमोचन मान्य अध्यक्ष व मुख्य अतिथि ने किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी महानुभावों ने संकल्प लिया कि यदि हम अपने बच्चों को संस्कारित कर पाएँ तभी हम पंडित जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएंगे। पंडित चंद्रभानु आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश चंद्र आर्य, ट्रस्टी इंडस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक सुभाष श्योराण व संयोजक सहदेव समर्पित सम्पादक शांतिधर्मी ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। समारोह में मुख्य रूप से चौधरी दिलबाग सिंह प्रधान आर्यसमाज खाण्डा खेड़ी, यशवीर आर्य बोदीवाली, चौ० अभयसिंह आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री देव ऋषि विद्यापीठ, नन्दगढ़, मनुदेव शास्त्री, सुलतान आर्य, अशोक गौतम, ओ.पी. मलिक, योगाचार्य सूर्यदेव आर्य, सत्यपाल सिंह आर्य, सुभाष आर्य, स्वर्गीय वैद्य दयाकृष्ण आर्य, वीरेन्द्र आर्य, अशोक खटकड़, डॉ० सुनीला मलिक, डॉ० रश्मि विद्यार्थी रामफल खटकड़, गुलाब सिंह आर्य, सुरेन्द्र आर्य, नरेश सिहाग, संगीता आर्या, डॉ० सूरजमल आर्य, सत्यव्रत आर्य व नरेन्द्र सोनी सहित सैंकडों लोग उपस्थित रहे। समस्त आर्यसमाज संस्थाओं के अतिरिक्त वरिष्ठ नागरिक परिषद्, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था, पतंजलि योग समिति, भारतीय योग संस्थान आदि सामाजिक संगठनों ने भी कार्यक्रम में सहयोग किया।

—सहदेव समर्पित,
सम्पादक शांतिधर्मी संयोजक

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।